ISSN 2454 - 5163

26 दिसम्बर 2020, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 39, अंक 6, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर
(हजार स्तम्भ वाला)
मूढबिद्री (कर्नाटक)

वीतराग–विज्ञान (449)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015
फोन :(0141)2705581, 2707458
E-mail : ptstjaipur67@gmail.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन :	251 रुपये
वार्षिक :	25 रुपये
एक प्रति :	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी :	7000
मराठी :	2000
कन्नड़ :	1000
कुल :	**10000**

ज्ञान गुण

जगत में लक्षण द्वारा लक्ष्य की पहिचान करायी जाती है। आत्मा का लक्षण ज्ञान है, उस ज्ञान लक्षण द्वारा ही आत्मा पहिचाना जाता है। शरीरादि तो आत्मा से अत्यन्त भिन्न हैं, इसलिये शरीर आत्मा का लक्षण नहीं है और रागादि भाव भी आत्मा के स्वभाव से अत्यन्त भिन्न हैं, वे रागादि भी आत्मा का लक्षण नहीं हैं। ज्ञान ही आत्मा का असाधारण विशेष गुण है, इसलिये वही आत्मा का लक्षण है। ज्ञानगुण स्व-पर को जानता है, आत्मा के अतिरिक्त अन्य किसी द्रव्य में ज्ञानगुण नहीं है और आत्मा के अनन्त धर्मों में भी एक ज्ञानगुण ही स्व-पर प्रकाशक है, इसलिये वह असाधारण है; ज्ञान के अतिरिक्त अन्य श्रद्धा चारित्रादि गुण निर्विकल्परूप हैं अर्थात् वे अपने को या पर को नहीं जानते हैं, मात्र ज्ञानगुण ही अपने को और पर को जानता है; इसलिये 'आत्मा ज्ञान मात्र है' ऐसा कहकर उस ज्ञान गुण द्वारा आत्मा की पहिचान करायी जाती है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 3-4

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार ।।

वर्ष : 39 (वीर नि. संवत् - 2547) 449 अंक : 6

अष्ट कर्म म्हांरौ...

अष्ट कर्म म्हांरौ कांई करसी जी, हूं म्हारै ही घर राखूं राम ।।टेक ।।
इन्द्री द्वारै चित दौरत है, सो वशकै नहिं करस्यूं काम ।।अष्ट. ।।
इनका जोर इताही मुझपै, दुख दिखलावै इन्द्रीग्राम।
जाकूं जानूं मैं नहीं मानूं, भेदविज्ञान करूं विसराम ।।
अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।1 ।।
कहूं राग कहूं दोष करत थौ, तब विधि आते मेरे धाम।
सो विभाव नहिं धारूं कबहूं, शुद्ध सुभाव रहूं अभिराम ।।
अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।2 ।।
जिनवर मुनिगुरु की बलि जाऊं, जिन बतलाया मेरा ठाम।
सुखी रहत हूं दुख नहिं व्यापत, 'बुधजन' हरषत आठौं जाम ।।
अष्ट कर्म म्हांरौ... ।।3 ।।

– कविवर पण्डित बुधजनजी

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2021

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 24 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 25 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 26 जनवरी 2021	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रातः 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर लेवें।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें। **– नीशू शास्त्री, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड**

ज्ञातव्य है कि यह 26 दिसम्बर का अंक जनवरी-2021 का ही अंक है।

सम्पादकीय

भरत का अन्तर्द्वन्द

सातवाँ अध्याय

(गतांक से आगे ...)

(दोहा)

अरे लौट के आ गया, चतुर दूत सानन्द।
सभी सुनाई भरत को, कुशल क्षेम आनन्द।। १।।

(रेखता)

दूत से बोले भरत नरेश सुनाओ कैसा था व्यवहार।
और कब कैसे क्या-क्या हुआ बताओ विगतवार सब बात।।
अहो वात्सल्यभाव से हमें बुलाया उनने अपने पास।
पूछने लगे भरत महाराज कुशल से तो हैं बारंबार ।। २ ।।

खुशी से भुजबलि कहने लगे हमें खुशियाँ हैं अपरंपार।
अरे रे भरत हुये चक्रेश बधाई देते सौ-सौ बार।।
और इस अवसर पर सस्नेह मुझे भी याद किया भरतेश।
जानकर उनके मन के भाव हुआ मुझको आनन्द विशेष।। ३।।

अरे रे और आपके साथ समय जो बीता उसको याद।
अरे करते थे बारंबार न उनको थी कोई फरियाद।।
अरे आने को थे तैयार और मिलने को आतुर थे।
आप जब राजमहल पहुँचें तभी आने को तत्पर थे ।। ४।।

किन्तु जब मैंने बतलाया कि इकदम चक्ररत्न रुक गया।
और वह यही चाहता है कि भाइयों को आ जाने दो।।
और सब चलें एक ही साथ अरे स्वागत हो सबका साथ।
और जब मैंने ऐसा कहा कि आप तो चलें हमारे साथ।। ५ ।।

एकदम उनको झटका लगा और वे मन में शंकित हुये।
और फिर उनने मुझसे कहा दूत तुम जाव भरत से कहो।।
यदी वे युद्धभूमि में मुझे बुलाते हैं तो आता हूँ।
सभी सेना भी रहेगी साथ और मैं भी आ जाता हूँ ।। ६ ।।

दूत ने जो कुछ भी है कहा नहीं उसमें कुछ भी प्रतिकूल।
अरे रे भाव और व्यवहार दिखाई देते हैं अनुकूल।।
किन्तु आ रहे फौज के साथ समझ में बात नहीं आई।
लड़ाई भी करनी होगी चित्त को बात नहीं भायी ।। ७ ।।

अरे वह स्वाभिमान का पिण्ड हारना उसने सीखा नहीं।
और वह सदा जीतता रहा अरे हम रहे जिताते उसे।।
और मैं देख नहीं सकता अरे रे उसे हारते हुये।
और वह कैसे देखेगा अरे रे मुझे हारते हुये ।। ८।।

'भाई का भाई से लड़ना नहीं है कोई अनोखी बात।
भरत अर बाहुबलि भी लड़े' – अरे लड़ने वाले यह कहें।।
अरे मैं नहीं चाहता भाई जगत में हो ऐसा परिहास।
भाइयों के लड़ने का किन्तु नहीं बनने दूँगा इतिहास।। ९।।

बाहुबलि से लड़ने की बात अरे मैं सोच नहीं सकता।
अधिक क्या और हारते हुये उसे मैं देख नहीं सकता।।
और लड़ने-मरने की बात किसी से मैं कर सकता नहीं।
मंत्रि परिषद् में करो विचार शान्ति से क्या हो सकता सही?।। १०।।

बाहुबलि की मंत्रीपरिषद् बहुत ही आकुल-व्याकुल है।
भरत की सेना बड़ी विशाल विपुल शस्त्रों से सज्जित है।।
जीतकर भरतक्षेत्र सम्पूर्ण अयोध्या वापिस आई है।
अरे रे चक्ररत्न है साथ 'नहीं लड़ना' चतुराई है ।। ११।।

अरे दोनों सेनाओं बीच नहीं तुलना हो सकती है।
अरे रे करो परस्पर बात युक्ति से कुछ करना होगा।।
अरे दो सेनायें क्यों लड़ें व्यर्थ ही रक्तपात होगा।
यदि लड़ना ही हो अनिवार्य भाइयों को लड़ना होगा।। १२।।

मंत्रिपरिषद् जब दोनों मिलीं तय हुआ दोनों भाई लड़ें।
अरे जलयुद्ध और मलयुद्ध और बस नेत्रयुद्ध होवे।।
अरे रे रक्तपात से बचें नहीं होवे कोई नुकसान।
इसतरह चतुराई से भाई अहिंसक रहे पूर्ण अभियान।। १३।।

अरे दोनों पक्षों के मंत्री भी तो नहीं चाहते थे।
कि दोनों भाई परस्पर लड़ें व्यर्थ ही मनमुटाव होवे।।
उक्त तीनों युद्धों के पीछे भी तो यही भावना थी।
अरे भाई भाई में बंधु लड़ाई ना होवे तो ठीक ।। १४।।

आँख से आँख मिलेगी जब नेह उमड़ेगा अन्तर में।
और जल के छीटों से भी अरे माथा ठंडा होगा।।
अरे जब मल्लयुद्ध के लिये गले से गले मिलेंगे वे।
फिर तो सभी समस्यायें सहज ही सुलझा लेंगे वे ।। १५।।

इसी उत्कृष्ट भावना से उन्होंने यह सब नक्की किया।
अरे वे सभी जानते थे कि युद्ध से कुछ भी होगा नहीं।।
भाई का भाई से हो युद्ध अरे आदर्श नहीं यह बात।
अरे यह बात नहीं है ठीक लगेगा सबको ही आघात।। १६।।

अहिंसक थे दोनों ही पक्ष अहिंसा प्रेमी सभी समाज।
सभी का हित हो जिसमें निहित वही होता है अच्छा काज।।
इसलिये सबको अच्छा लगा और खुश थे दोनों ही पक्ष।
सभी को अन्तर से यह लगा हुआ है समाधान निष्पक्ष।। १७।।

मंत्रिपरिषद् का यह प्रस्ताव भरत-बाहूबलि को स्वीकार।
हो गया सहजभाव से सहज किसी ने किया नहीं इंकार।।
युद्ध टल गया ठीक ही हुआ यही था दोनों को ही इष्ट।
सभी को ऐसा अनुभव हुआ कि अब तो होगा नहीं अनिष्ट।। १८।।

बाहुबलि के थे वार्ताकार कूटनीती के अति मर्मज्ञ।
भरत की मूल शक्ति सेना अरे थी चक्ररत्न के साथ।।
उसे कर दूर शक्ति से हीन किये थे उनने भरत नरेश।
युद्ध को बना दिया था खेल निहत्थे किये भरत चक्रेश।। १९।।

यद्यपी भरत जानते थे और सब समझ रहे थे खेल।
फिर भी किया सहज स्वीकार उन्हें भी इष्ट नहीं था युद्ध।।
हराना नहीं चाहते थे हारना भी तो क्यों चाहें?।
तो इसका यही अर्थ है साफ कि लड़ना नहीं चाहते थे।। २०।।

भरतजी के मन की यह बात कोई भी नहीं जानता था।
कि उनको हार-जीत की बात भाई से नहीं सुहाती है।।
व्यर्थ ही खेल-खेल में लड़ें व्यर्थ का नाटक करते फिरें।
किसी से हारें अथवा अरे किसी को व्यर्थ हराते फिरें।। २१।।

वे तो यही चाहते थे कि भाई-भाई मिलकर रहें।
स्वयं के नहीं जगत के भी सभी भाई मिलजुलकर रहें।।
हमारे बारे में सब लोग 'नहीं लड़ने' की चर्चा करें।
और कुछ सीखें ना सीखें सदा मिलकर रहना सीखें।। २२।।

आई जब तीन युद्ध की बात बाहुबलि होकर के तैयार।
अखाड़े में आ पहुँचे शीघ्र और थे लड़ने को तैयार।।
भरतजी वैसे ही आये कि जैसे आये हों दरबार।
अमात्यों ने उनको देखा तो कुछ भी समझ नहीं पाये।। २३।।

आप तो ऐसे ही आ गये आप तो हुये नहीं तैयार।
मुझे भाई से लड़ना नहीं इसलिये हुआ नहीं तैयार।।
अरे रे अवधपुरी में चक्र जीत के बिन जावेगा नहीं।
अरे कब क्या कैसे होगा समझ में आता है कुछ नहीं।। २४।।

केवली ने जब जैसा जो अरे देखा जाना होगा।
वही होगा वही होगा समझना हमें यही होगा।।
अरे कुछ भी चिन्ता मत करो चलो हम भी तो चलते हैं।
और जो कुछ जैसा होगा वहीं पर चलकर देखेंगे ।। २५।।

अरे कुछ भी चिन्ता मत करो सभी कुछ अच्छा ही होगा।
हमें तो वही सहज स्वीकार जो होना होगा सो होगा।।
चक्र को जो कुछ करना हो जहाँ आना-जाना हो जाय।
कहीं भी आना-जाना नहीं अरे हम तो अपने में जाँय।। २६।।

अरे हम चलते हैं तुम चलो और भुजबलि का स्वागत करें।
करें कुछ मीठी-मीठी बात प्रेम से आलिंगन हम करें।।
गले से गले मिलें दोनों और सुख-दुख की बातें करें।
मुझे लड़ने में रस कुछ नहीं और कुछ दिन हिलमिलकर रहें।। २७।।

बाहुबलि आओ आओ पास वहाँ ऐसे कैसे तुम खड़े।
अरे तुम मेरे छोटे भाइ और हम हैं तुमसे कुछ बड़े।।
अरे तुम छोड़ो सभी विकल्प हमें तुमसे लड़ना है नहीं।
हमें तुम से है अतिशय प्रेम व्यर्थ में हमें झगड़ना नहीं।। २८।।

आपका जीवन हम जानें आपके मन को पहिचानें।
आपमें हमको शंका नहीं और आशंका कुछ भी नहीं।।
किन्तु यह चक्ररत्न की बात अरे सारी दुनियाँ जाने।
और इसकी जो अद्भुत जिद्द उसे भी सारा जग जानें।। २९।।

अरे हम चक्ररत्न के लिये भाइयों से लड़ सकते नहीं।
किसी की सम्पत्ति के लिये किसी का वध कर सकते नहीं।।
हमारा अवधपुरी आवास कि जिसमें वध होता ही नहीं।
अवध के वासी हैं हम लोग जहाँ पर हिंसा होती नहीं।। ३०।।

जहाँ न वध का कोई काम जहाँ न वध का नाम निशान।
जहाँ है वध का पूर्ण निषेध वही है अवधपुरी का धाम।।
एक भी राजा का वध नहीं हुआ दिग्विजययात्रा में।
इसलिये अभी अयोध्या को सभी जन अवधपुरी कहते।। ३१।।

अरे रे हमें हराये बिना चक्रवर्ती बन सकते नहीं।
अरे रे और हारते हुये तुम्हें हम देख नहीं सकते।।
आज तक मेरे प्रियतम अनुज! जीतते ही देखा है तुम्हें।
आज भी जीतोगे हे अनुज! नहीं शंका की कोई बात।। ३२।।

अरे स्वीकृत करने के पूर्व मैं यह बात जानता था।
तुम्हीं जीतोगे तीनों युद्ध क्योंकि तुम मुझसे लम्बे हो।।
अरे अब लड़ने की क्या बात हार मैं करता हूँ स्वीकार।
तुम्हारी जीत मुझे स्वीकार तुम्हारी जीत मुझे स्वीकार।। ३३।।

अरे रे चक्ररत्न तुम जाव अरे मेरे भाई के पास।
अरे उनकी सेवा में रहो और उनको करने दो राज।।
अरे रे चक्ररत्न अड़ गया नहीं जाने को था तैयार।
भरत ने धक्का देकर कहा जाव तुम जावो उनके पास।। ३४।।

चक्र धीरे-धीरे से गया पहुँचकर बाहुबलि के पास।
अरे अत्यन्त विनय से झुका अरे उनके चरणों के पास।।
प्रदक्षिणा दे देकर के तीन रुक गया था वह उनके पास।
श्री बाहुबलि ने तब कहा अरे तुम जाव भरत के पास।। ३५।।

अरे वह चक्ररत्न आ गया पुनः श्री भरतराज के हाथ।
अनुज भुजबली खड़े थे पास जुड़े थे उनके दोनों हाथ।।
दोनों बन्धु हो गये एक उपस्थित था सम्पूर्ण समाज।
गले से गले मिले थे बन्धु अनोखा था उनका अन्दाज।। ३६।।

इसी को कहते हैं कुछ लोग भरत ने चक्र चलाया था।
कुटुम्बीजन पर चलता नहीं इसलिये न चल पाया था।।
जब यह बात जानते आप, क्या इतना न जानते वे?।
अरे यह बात व्यर्थ अपवाद सभी यह बात जानते थे।। ३७।।

अनुज तुम सबप्रकार से योग्य संभालो छहखण्डों का राज।
जाकर ऋषभदेव के पास मैं लूँगा दिव्यध्वनि का लाभ।।
अभी तक इसमें उलझा रहा नहीं ले पाया ध्वनि का लाभ।
और अब जागा है सद्भाग्य मुझे लेने दो उसका लाभ।। ३८।।

मैं रहा तरसता बन्धु दिव्यध्वनि को सुनने के लिये।
आपने लिया लाभ भरपूर और मैं भरतक्षेत्र के लिये।।
घूमता रहा भटकता रहा किया ना कुछ भी अपने लिये।
मिला है मुझको मौका अनुज सहज ही अरे स्वयं के लिये।। ३९।।

(क्रमशः)

छहढाला प्रवचन

बोधिदुर्लभ भावना

अंतिम-ग्रीवकलौं की हद, पायो अनन्त विरियां पद।
पर सम्यग्ज्ञान न लाधौ, दुर्लभ निज में मुनि साधौ।।१३।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की पांचवीं ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

यह जीव सम्यग्दर्शन के बिना संसार में भटकता हुआ अनन्तबार नवमें ग्रैवेयक में भी गया है; परन्तु उसे अपने स्वभाव का सम्यग्ज्ञान कभी नहीं हुआ। इसलिए सम्यग्ज्ञान इस संसार में सबसे दुर्लभ है। मुनिराज और श्रावक ऐसे दुर्लभ सम्यग्ज्ञान को साधकर उसे धारण करते हैं।

सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होने पर भी रत्नत्रय की पूर्णतारूपी बोधि की प्राप्ति विशेष दुर्लभ है – ऐसा चिन्तवन करके मुनिराज रत्नत्रय की साधना में अत्यन्त सावधान रहते हैं। संसार के सभी पद तो इस जीव को अनन्त बार मिल चुके हैं, अतः वे सुलभ हैं; परन्तु सारभूत नहीं हैं – ऐसा जानकर उसे इन पदों के प्रति विरक्ति हो जाती है और वह आत्मज्ञान को दुर्लभ और सारभूत जानकर आत्मा में एकाग्र होता है – यही बोधिदुर्लभ भावना है अर्थात् दुर्लभस्वरूप रत्नत्रय की अखण्ड साधना ही बोधिदुर्लभ भावना है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र की अखण्डता को बोधि कहते हैं। मुनिराज उसी की साधना करते हैं। सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना भी महादुर्लभ है तो रत्नत्रय की दुर्लभता की क्या बात करें? इसप्रकार उसकी दुर्लभता का विचार करके उसी आराधना का विशेष उद्यम करना बोधिदुर्लभ भावना है।

ये बारह भावनायें वैराग्य की माता है। जिसप्रकार माता पुत्र को पुष्ट करती है, उसीप्रकार बारह भावनायें वैराग्य को पुष्ट करती हैं। सम्यग्दृष्टि

जीव शुद्धि की वृद्धि के लिए इन भावनाओं को भाते हुए स्वभाव में एकाग्रता करते हैं।

चौथी ढाल में कहा था कि यह जीव अनन्त बार देवलोक में ग्रैवेयक तक भी गया; परन्तु इसे आत्मज्ञान के बिना किंचित् भी सुख नहीं मिला। यहाँ भी यही बात कही है कि इस जीव ने अन्तिम ग्रैवेयक में देवपद अनन्त बार प्राप्त किया; परन्तु इसे सम्यग्ज्ञान नहीं हुआ। इसलिए देवपद की अपेक्षा सम्यग्ज्ञान अर्थात् बोधि प्राप्त होना दुर्लभ है।

यदि शुभराग करते-करते सम्यग्ज्ञान हो जाता होता तो अनन्तबार ग्रैवेयक प्राप्त करने योग्य शुभराग होने पर भी सम्यग्ज्ञान क्यों नहीं हुआ? इसलिए विचार करना चाहिए कि सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने की रीति शुभराग से भिन्न है। यदि शुभराग से सम्यग्ज्ञान प्राप्त हो जाता तो उसे दुर्लभ क्यों कहते? यह जीव पाप और पुण्य करते-करते चारों गतियों में अनन्तभव धारण करता है। अज्ञानी जीव संसार में अकेला पापभाव ही करता है और पुण्य बिल्कुल नहीं करता - ऐसा नहीं है। वह पुण्य करके भी अनन्त बार स्वर्ग में गया; परन्तु सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हुई।

यहाँ यह ध्यान में रखना चाहिए कि नवमें ग्रैवेयक में सभी जीव मिथ्यादृष्टि नहीं हैं। सम्यग्दृष्टि जीव भी नवमें ग्रैवेयक में जाते हैं। वहाँ सम्यग्दृष्टि जीव बहुत हैं और मिथ्यादृष्टि जीव थोड़े हैं, उनमें से भी कोई जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लेते हैं। नवमें ग्रैवेयक के कारणों में श्रद्धा तथा निर्दोष द्रव्यलिंग सहित महाव्रतों का पालन होता है। यदि उनमें भी गड़बड़ हो अर्थात् दोष हों तो वह ग्रैवेयक नहीं जा सकते।

दूसरी बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि अनन्तबार नवमें ग्रैवेयक में जाने की और चार गति में भटकने की बात निगोद से निकलकर व्यवहार राशि में आनेवाले जीवों की अपेक्षा है। इनसे भी अनन्तगुणा जीव ऐसे हैं जो अभी तक निगोद से निकले ही नहीं हैं, अभी तक उन्होंने त्रसपर्याय भी प्राप्त नहीं की। निगोद से निकलकर त्रस पर्याय पाना भी अतिदुर्लभ है। त्रसपर्याय में भी मनुष्यायु, जैनधर्म एवं सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होना तो उत्तरोत्तर अधिक-अधिक दुर्लभ है तो फिर रत्नत्रय की पूर्णता पाना कितना दुर्लभ है। इसका विचार करना चाहिए।

भूधरदासजी ने भी बोधिदुर्लभ भावना में लिखा है -

''दुर्लभ है संसार में एक जथारथ ज्ञान''

इस संसार में पुण्य करना एवं उसका फल प्राप्त करना सुलभ है; परन्तु सम्यग्ज्ञान प्राप्त करना अतिदुर्लभ है। सम्यग्ज्ञान तो राग रहित अतीन्द्रिय ज्ञानस्वभावी आत्मा को जानने से होता है। यहाँ उसे दुर्लभ कहकर उसकी प्राप्ति की प्रेरणा देते हैं। दुर्लभता बताकर हिम्मत हारने की बात नहीं है; क्योंकि दुर्लभ कहा है, अशक्य नहीं कहा। दुर्लभ होने पर भी सच्चे पुरुषार्थ द्वारा सुलभ हो जाता है। अनेक जीवों ने सम्यग्ज्ञान प्रकट किया है। जो न करे, उसके लिए दुर्लभ है; परन्तु जो करे, उसके लिए तो सुलभ ही हो गया न। इसप्रकार सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने की प्रेरणा पाकर रत्नत्रय का पुरुषार्थ करना ही सच्ची बोधिदुर्लभ भावना है।

दुर्लभ को सुलभ बनाने के लिए यह बोधिदुर्लभ भावना है। जो दुर्लभ है, वह अपने लिए सदैव दुर्लभ ही रहेगी - ऐसा नहीं है। यदि ऐसा ही हो तो इस जीव को रत्नत्रय की प्राप्ति कैसे होगी? सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति जगत के जीवों के लिए भले ही दुर्लभ हो; परन्तु धर्मी के लिए तो सुलभ हो गयी है। जैसे त्रसपर्याय प्राप्त होना अनन्त जीवों के लिए दुर्लभ है; परन्तु स्वयं को तो वह प्राप्त हो गयी है, फिर अपने लिए दुर्लभ कहाँ रही? अपने लिए तो सुलभ हो ही गई। इसीप्रकार शुद्धात्मा की बात सुनने मिलना ही दुर्लभ है; परन्तु सन्तों के प्रताप से अपने को तो वह सुलभ हो गई है। इसलिए अब इससे आगे बढ़ने की भावना और प्रयत्न करना चाहिए। सम्यग्दृष्टि को तो सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान भी सुलभ हो गये हैं। अब वह बोधिरूप रत्नत्रय की दुर्लभता का विचार करके उसके लिए प्रयत्न करता है - यही बोधिदुर्लभ भावना है।

(क्रमशः)

नियमसार प्रवचन –

आत्मध्यान ही प्रतिक्रमण है

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ९४ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं –

पडिकमणणामधेये सुत्ते जह वण्णिदं पडिक्कमणं।
तह णच्चा जो भावइ तस्स तदा होदि पडिक्कमणं।।९४।।

(हरिगीत)

प्रतिक्रमण नामक सूत्र में वर्णन किया जिसरूप में।
प्रतिक्रमण होता उसे जो भावे उसे उस रूप में।।९४।।

प्रतिक्रमण नामक सूत्र में प्रतिक्रमण का स्वरूप जिसप्रकार बताया गया है, उसे जब मुनिराज तदनुसार भाते हैं; तब उन्हें प्रतिक्रमण होता है।

(गतांक से आगे....)

सूत्र में स्वभाव की एकाग्रता करना ही प्रतिक्रमण कहा गया है। व्यवहार-प्रतिक्रमण का विकल्प टूटकर स्वभाव में स्थिरता हो जाने पर ही व्यवहार-प्रतिक्रमण की सफलता है।

चैतन्य की श्रद्धा-ज्ञान होने के बाद द्रव्यश्रुत में कथित प्रतिक्रमण को जानकर जो जीव स्वरूप में स्थित होता है, उसे ही प्रतिक्रमण होता है। दृष्टि का विषय परिपूर्ण परमात्मतत्त्व है, उसके दृष्टि में आने के पश्चात् पंचमहाव्रतादि का विकल्प उठा, 'महाव्रत के दोष छोड़े – ऐसा व्यवहार-प्रतिक्रमण का विकल्प उठा, उस विकल्प को भी छोड़कर चैतन्य के निश्चयध्यान में ठहरनेवाले के ही व्यवहार-प्रतिक्रमण की सफलता है।

समस्त आगम के सारासार का विचार करने में सुन्दर चातुर्यवाले तथा गुणसमूह के धारक निर्यापक आचार्यों ने द्रव्यश्रुतरूप प्रतिक्रमण नामक सूत्र में प्रतिक्रमण को अतिविस्तार से स्पष्ट किया है।

देखो, विचार तो अनेक जीव करते हैं; किन्तु यहाँ तो कहा है कि आचार्य सारासार के विचार में सुन्दर चातुर्यवाले हैं। वर्षों तक शास्त्रपठन करके उसमें से व्यवहार के आश्रय से लाभ होने का आशय निकालनेवाला सारासार के विचार में सुन्दर चातुर्यवाला नहीं है, इसलिए कहा है कि ऐसे चतुर आचार्यों ने शास्त्र में जैसा वर्णन किया है, वैसा ही प्रतिक्रमण का स्वरूप जानकर जिननीति का उल्लंघन नहीं करते हुए सुन्दर चारित्रमूर्त्ति महामुनि सकलसंयम की भावना करते हैं। अहो! मुनि का दर्शन करते ही ऐसा लगे मानो चारित्र की मूर्ति ही हो। जिनकी इन्द्रियाँ विषयों की तरफ से संकुचित हो गई हों, बाह्य में परिग्रहरहित दशा हो और परमगुरु के चरणों के स्मरण में जिनका चित्त आसक्त हो – ऐसे मुनिवरों को सच्चा प्रतिक्रमण होता है। इसमें दोनों बातें आ गई कि सकलसंयम की भावना से स्वरूप में ठहरते हैं और जब विकल्प उठता है, तब परमगुरु के प्रति भक्ति का शुभभाव भी आता है – ऐसी दशावाले चारित्रमूर्ति मुनिराजों को ही प्रतिक्रमण होता है।

अब इस परमार्थ-प्रतिक्रमण अधिकार की अन्तिम गाथा की टीका पूर्ण करते हुए टीकाकार मुनिराज श्री पद्मप्रभमलधारिदेव दो श्लोक कहते हैं :-

(इन्द्रवज्रा)

निर्यापकाचार्यनिरुक्तियुक्ता-
मुक्तिं सदाकर्ण्य च यस्य चित्तम्।
समस्तचारित्रनिकेतनं स्यात्
तस्मै नम: संयमधारिणेऽस्मै।।१२५।।

(दोहा)

निर्यापक आचार्य के सुनकर वचन सयुक्ति।
जिनका चित्त चारित्र घर वन्दूँ उनको नित्य।।१२५।।

निर्यापक आचार्यों की निरुक्ति (-व्याख्या) (सहित प्रतिक्रमणादि सम्बन्धी) कथन सदा सुनकर जिसका चित्त समस्त चारित्र निकेतन (-धाम) बनता है, ऐसे उस संयमधारी को नमस्कार हो।

निर्यापक अर्थात् चारित्र का निर्वाह करनेवाले आचार्यों से प्रतिक्रमण आदि का स्वरूप जानकर चैतन्य की शुद्धता में ठहरना ही प्रतिक्रमण है, शुभभाव वास्तविक प्रतिक्रमण नहीं है। पुण्य-पाप दोनों से विमुख होकर चिदानन्द आत्मा में एकाग्र होना ही परमार्थ-प्रतिक्रमण है, उसी का नाम धर्म है और वही मुक्ति का कारण है। प्रतिक्रमण का स्वरूप सुनकर जिन मुनियों का चित्त शुद्धचारित्र का धाम बनता है, शान्त होकर जो आत्मा के आनन्द में ठहर जाते हैं, उन्हें हमारा नमस्कार!

प्रतिक्रमण में आचार्यों ने भले ही व्यवहार से शुभ का कथन किया हो; परन्तु उसे सुनकर जो जीव स्वभाव में एकाग्र होकर लीन होते हैं, उन्हें परमार्थ-प्रतिक्रमण होता है; प्रतिक्रमण के समस्त वर्णन का सुफल तो बस इतना ही है। प्रतिक्रमण के शब्द अथवा उस तरफ का राग सच्चा प्रतिक्रमण नहीं है; किन्तु चिदानन्द ज्ञायक आत्मा में रमणता ही परमार्थ-प्रतिक्रमण है - ऐसा समझकर, जो अपने आत्मा में लीन होते हैं, उन मुनियों को समस्त चारित्र है और ऐसे संयमधारियों को ही यहाँ नमस्कार किया है।

व्यवहार का विकल्प प्रतिक्रमण नहीं, विषकुम्भ है। उस विकल्प को तोड़कर स्वरूप में स्थिर होनेवाले को ही प्रतिक्रमण का सफलपना है। व्यवहार के विकल्प में अटकनेवाले को निश्चय-प्रतिक्रमण नहीं होता। निर्यापकाचार्यों ने भी यह बात सुनाई थी कि प्रतिक्रमण का शुभ विकल्प निश्चय से विषकुम्भ है और शुभाशुभरहित होकर स्वरूप में लीनता होना ही अमृतकुम्भमय प्रतिक्रमण है। गृहस्थ ऐसा भान भी न करे और बाह्य शुभ क्रियाकाण्ड से धर्म माने, तो उसे गृहस्थपने का धर्म (सम्यक् श्रद्धा-ज्ञान) भी नहीं है।

अहो! मैं आत्मा तो चैतन्यप्रतिमा हूँ, मैं स्वयं ही परमात्मशक्ति का पिण्ड हूँ, ऐसा भान करना वह गृहस्थों का धर्म है, फिर उसमें विशेष लीनता मुनिधर्म है। पुण्य-पाप के परिणाम नये होते हैं; किन्तु ये चैतन्य तो अनादि से है, नया नहीं है - ऐसा न समझकर पुण्य-पाप जितना ही अपने को माने, वह अनादिकालीन भ्रम है और संसारभ्रमण का मूल है। पहले 'मैं शुद्ध चैतन्यपरमात्मा त्रिकाल हूँ'- ऐसा भान होता है, पश्चात् मुनिदशा होती है।

चारों अनुयोगों का सार वीतरागता है। चरणानुयोग में वर्णित प्रतिक्रमण के स्वरूप का सार भी वीतरागता ही है। चैतन्य का आश्रय करके जितनी वीतरागदशा हुई, उतना धर्म है - ऐसा जिनेन्द्र ने कहा है।

शक्ति में तू स्वयं भगवान है, उसकी सँभाल कर! रुचि कर!! ध्यान कर!!! - ऐसा श्री महापुरुषों ने कहा है।

चरणानुयोग में कथित प्रतिक्रमण का सार भी यही है कि चैतन्य में ठहरना। जितनी चैतन्य में लीनता है, उतना ही प्रतिक्रमण है।

अज्ञानी जीव दूसरे के पास जाकर कहता है कि 'मुझे क्षमा करो, मेरे अपराध को क्षमा करो'; किन्तु अनादि अज्ञान से अपने चैतन्यस्वभाव को विकारी मानकर उसका अनादर किया है, उसकी क्षमा चैतन्य के पास से क्या कभी माँगी है कि हे चैतन्य! अनादि अज्ञान से तुझे विकारी मानकर मैंने तेरा असीम अनादर किया है, अब शुद्धात्मा का भान करके उस अनादर के अपराध का प्रतिक्रमण करता हूँ, इसलिये मुझे क्षमा करना? प्रथम चैतन्य का भान करके मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण होता है, तत्पश्चात् चैतन्य में लीनता होने पर मुनिदशारूप प्रतिक्रमण होता है। **(क्रमशः)**

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **- मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

विभुत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

सर्वभावव्यापकैकभावरूपा विभुत्वशक्तिः।

सर्वभावों में व्यापक ऐसे एक भावरूप विभुत्वशक्ति है।

जैसे ज्ञानरूपी एकभाव सर्वभावों में व्यापक है, उसीप्रकार एकभावरूप विभुत्वशक्ति सर्वभावों में व्यापक है।

आत्मा शुद्ध चैतन्यमय पदार्थ है, वह कर्म और शरीर से सदा ही भिन्न है। आत्मा के अन्दर जो पुण्य-पाप के विकल्प उठते हैं, उनसे भी भगवान आत्मा वास्तव में भिन्न ही हैं; क्योंकि विकल्पों का त्रिकाली के साथ तादात्म्य नहीं होता। वह तो अपनी अनन्तशक्तियों से ही अभिन्न रहता है, एकरूप रहता है; क्योंकि आत्मा की अनन्तशक्तियों में से इस समयसार में ४७ शक्तियों का वर्णन किया है, जिनमें से यहाँ **आठवीं विभुत्वशक्ति का वर्णन शुरू करते हैं –**

विभुत्वशक्ति सर्वभावों में व्यापक ऐसे एकभावरूप है। आत्मवस्तु में जो ज्ञान-दर्शन-चिति-जीवत्व-प्रभुत्व आदि अनन्त शक्तियाँ हैं, उनको यहाँ भाव कहा है।

द्रव्य, गुण, पर्याय और राग अर्थात् विकारी पर्याय – इसप्रकार भाव शब्द का प्रयोग चार अर्थों में किया जाता है।

इनमें से यहाँ त्रिकाली शक्ति को भाव कहा है। तात्पर्य यह है कि

यद्यपि यह विभुत्वशक्ति सर्वभावों में व्यापक है; फिर भी अन्य अनन्तभावों रूप नहीं होती, वह तो सदा एकभावरूप ही रहती है। एकभाव में रहकर भी अनन्तगुणों में व्यापना आत्मा का विभुत्व है।

यहाँ ज्ञान का दृष्टान्त दिया है। जिसप्रकार ज्ञानरूपी एकभाव सर्वभावों में व्यापक है, उसीप्रकार एकभाव रूप विभुत्व भी सर्वभावों में, सम्पूर्ण आत्मद्रव्य में व्यापक है।

इसप्रकार विभुत्व स्वभाव द्वारा आत्मा सर्वव्याक है तथा आत्मा का प्रत्येक गुण भी विभु अर्थात् सर्वव्यापक है।

अन्यमती आत्मा को ब्रह्म के रूप में पूरे विश्व में व्यापक मानते हैं; उनका मानना है कि आकाश (लोकाकाश) में सर्वत्र एकमात्र ब्रह्म ही हैं; परन्तु भाई! आत्मवस्तु ऐसी नहीं है।

यहाँ तो जो अपने सर्व गुण-पर्यायों में व्यापे उस आत्मा को विभु कहा है। प्रत्येक आत्मवस्तु अपने स्वरूप को छोड़कर बाहर कहीं भी (अन्यद्रव्यों में) व्याप्त नहीं होती।

इसप्रकार बाह्य के समस्त परद्रव्यों से भिन्न और अपने अनन्त गुण-पर्यायों में व्याप्त आत्मा विभुस्वभावी है।

प्रश्न – स्तोत्रों में जगह-जगह भगवान अरहंत को विभु कहा गया है उसका क्या अभिप्राय है?

उत्तर – भगवान भी विभुत्वस्वभाव के प्रगट होने पर आत्मा के सर्व अनन्तगुण-पर्यायों में रहते हैं, इसलिए विभु हैं। आत्मा में ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जिसके कारण आत्मा लोकालोक में व्याप्त हो।

हाँ! ऐसी शक्ति अवश्य है कि आत्मा अपने में रहकर लोकालोक को सहज जानता है –ऐसा इसका विभुत्वपना है।

अहो! यह विभुत्वशक्ति अजब-गजब की है। आत्मा तो विभु है ही, 'ज्ञान-दर्शन-चारित्र' आदि अनन्तगुण भी स्वतंत्रपने पृथक्-पृथक् विभु

हैं। जैसे अस्ति गुण से सभी गुण अस्तिरूप हैं; वैसे ही विभुत्वगुण भी सभी गुणों में व्यापकर उनको विभुत्वशक्तियुक्त बना देता है।

ऐसी निज विभुत्वशक्ति को जानकर तथा शक्ति और शक्तिवान के भेद का लक्ष्य छोड़ अभेद-अखण्ड एक शक्तिवान द्रव्य पर दृष्टि करना ही सम्यग्दर्शन है। यह धर्म करने की रीति है।

शक्तियों का भेद मात्र जानने लायक है। सम्यग्दर्शन प्रगट करने के लिए तो दृष्टि भेद पर से हटाकर अभेद पर ही ले जाना पड़ेगी।

देखो! द्रव्य में-आत्मवस्तु में सर्वशक्तियाँ अक्रम से अर्थात् एक साथ रहतीं हैं और पर्यायें क्रम से एक के बाद एक सुनिश्चित होती हैं। जैसे ज्ञानगुण की पर्याय एक के बाद एक क्रमबद्ध होती हैं, वैसी ही सभी गुणों की पर्यायें होती हैं। **(क्रमशः)**

पहले विकल्प सहित दृढ निश्चय तो करे कि राग से, निमित्त से, खण्ड-खण्ड ज्ञान से तथा गुण-गुणी के भेद से भी आत्मा ज्ञात नहीं होता – इसप्रकार पहले निर्णय का दृढ स्तम्भ लगाये! उससे पर की ओर जाता हुआ वीर्य तो वहीं रुक जाता है, भले अभी स्वोन्मुख होना बाकी है....विकल्पयुक्त निर्णय में भी विकल्पयुक्त नहीं हूँ – ऐसा पहले दृढ करे! निर्णय पक्का होने पर राग अपंग हो जाता है, उसकी शक्ति कम हो जाती है। विकल्पयुक्त निर्णय में स्थूल कर्तृत्व छूट जाता है और फिर भीतर स्वानुभव में जाने पर निर्णय सम्यक्रूप होता है।

– द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ-३२

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : वस्तु के स्वरूप का निश्चय किसप्रकार करना चाहिए?

उत्तर : वस्तु के स्वरूप का निश्चय इसप्रकार होना चाहिए कि इस जगत् में मैं स्वभाव से ज्ञायक ही हूँ तथा मुझसे भिन्न इस जगत् के जड़-चेतन समस्त पदार्थ मेरे ज्ञेय ही हैं। विश्व के पदार्थों के साथ मात्र ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध को छोड़कर मेरा अन्य कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई भी पदार्थ मेरा नहीं है और न मैं किसी के कार्य को करता हूँ। प्रत्येक पदार्थ अपने स्वभाव-सामर्थ्य से ही उत्पाद-व्यय-ध्रौव्यस्वरूप परिणमन कर रहा है, उसके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जो जीव ऐसा निर्णय करे, वही पर के साथ का सम्बन्ध तोड़कर उपयोग को निजस्वरूप में लगाता है, इसलिए उसी को स्वरूप में चरणरूप चारित्र होता है।

इसप्रकार चारित्र के लिए प्रथम वस्तुस्वरूप का निर्णय करना चाहिए।

प्रश्न : न्याय और तर्क से तो यह बात जमती है; किन्तु अन्दर में जाने का साहस क्यों नहीं हो पाता?

उत्तर : अन्दर में पहुँचने का जितना पुरुषार्थ होना चाहिए, उतना नहीं बन पाता; इसीलिए बाहर भटकता रहता है। अन्दर जाने की रुचि नहीं; इसलिए उपयोग अन्दर नहीं जाता।

प्रश्न : वर्तमान में कर्मबन्धन है, हीनदशा है, रागादिभाव भी वर्तते हैं तो ऐसी दशा में शुद्धात्मा की अनुभूति कैसे हो सकती है?

उत्तर : रागादिभाव वर्तमान में वर्तते होने पर भी वे सब भाव क्षणिक हैं, विनाशीक हैं, अभूतार्थ हैं, झूठे हैं; अतः उनका लक्ष्य छोड़कर त्रिकाली ध्रुव शुद्ध आत्मा का लक्ष्य करके आत्मानुभूति हो सकती है। रागादिभाव तो एक समय की स्थितिवाले हैं और भगवान आत्मा त्रिकाल टिकनेवाला

अबद्धस्पृष्टस्वरूप है। इसलिए एक समय की क्षणिक पर्याय का लक्ष्य छोड़कर त्रिकाली शुद्ध आत्मा का लक्ष्य करते ही, दृष्टि करते ही आत्मानुभूति हो सकती है।

प्रश्न : ज्ञानी जीव सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है और सम्यक्त्व-सन्मुख जीव भी सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है। उन दोनों की विधि का प्रकार एक ही है या उसमें कोई विलक्षणता है?

उत्तर : ज्ञानी जीव सविकल्प द्वारा निर्विकल्प होता है, उसे तो आत्मा का लक्ष्य हुआ है, आत्मा लक्ष्य में है और उसमें एकाग्रता का विशेष पुरुषार्थ करने पर विकल्प छूटकर निर्विकल्प होता है; परन्तु स्व-सन्मुख जीव को तो अभी आत्मा का लक्ष्य ही नहीं हुआ। विकल्प से आत्मा का लक्ष्य बाहर-बाहर हुआ है, उसको अन्दर पुरुषार्थ उग्र होने पर सविकल्पता छूटकर निर्विकल्पता होती है। इसप्रकार निर्विकल्प होने की विधि का प्रकार एक होने पर भी ज्ञानी ने तो वेदन से आत्मा जाना है और स्वसन्मुख वाले ने बाहर-बाहर आनन्द के वेदन बिना आत्मा को जाना है।

प्रश्न : विकल्प से निर्विकल्प होने में सूक्ष्म विकल्प रोकता है, उसका क्या करें?

उत्तर : निर्विकल्प होने में विकल्प रोकता नहीं है। वास्तविकता यह है कि तू स्वयं अन्दर में ढलने योग्य पुरुषार्थ करता नहीं है, इसलिए विकल्प टूटता नहीं है।

विकल्प को तोड़ना नहीं पड़ता; किन्तु स्वरूप में ढलने का पुरुषार्थ उग्र होने पर विकल्प सहज ही टूट जाता है।

प्रश्न : सम्यक्त्वसन्मुखजीव तत्त्व के विचार में राग को अपना जानता है क्या?

उत्तर : सम्यक्त्व-सन्मुख जीव ऐसा जानता है कि राग है, वह मेरा अपराध है; राग मेरा स्वरूप नहीं, राग मैं नहीं- ऐसा जानकर उसका लक्ष्य छोड़कर अन्दर में जाने का- आत्मानुभव करने का प्रयत्न करता है। ●

समाचार दर्शन -

शिखर महोत्सव सम्पन्न

अष्टाह्निका महोत्सव के अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई और श्री कुन्दकन्द कहान सर्वोदय ट्रस्ट दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में शाश्वत तीर्थक्षेत्र सम्मेदशिखरजी की तलहटी में स्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर के जिनमंदिर का आठवाँ वार्षिकोत्सव और 43वाँ आध्यात्मिक ऑनलाइन शिक्षण शिविर दिनांक 22 से 29 नवम्बर तक शिखर महोत्सव के रूप में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर शिखरजी स्थित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर द्वारा रचित श्री प्रवनचसार मण्डल विधान का आयोजन पण्डित संजय शास्त्री जेवर और पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के विधानाचार्यत्व में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री नेमिषभाई शाह मुम्बई, ध्वजोहरण श्री सुनीलजी सर्राफ सागर एवं चित्रों के अनावरण विधि श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा, श्री राजेशभाई जवेरी अहमदाबाद और श्री विपुल भाई मोटाणी मुम्बई द्वारा हुई। श्रीमती निकिता ज्ञाता झांझरी सूरत के मंगलाचरण से प्रारंभ हुई इस सभा में श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री अशोकजी बड़जात्या इंदौर, श्री अजितभाई जैन बड़ौदरा और श्री अशोकजी बजाज परिवार सहित उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन श्री वीनूभाई शाह मुम्बई ने किया।

इस प्रसंग पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर का मांगलिक व्याख्यान संपन्न हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम प्रवचनसार ग्रन्थ के स्वाध्याय की मुख्यता से तैयार किया गया था; अत: प्रात:कालीन विधान से लेकर समस्त प्रवचन और गोष्ठियाँ प्रवचनसार ग्रन्थ के विषयों और उपविषयों पर आधारित थीं। कार्यक्रम में गुरूदेवश्री के प्रवचनसार ग्रन्थ पर सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री सनावद, ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित प्रदीपजी झांझरी सूरत, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. शांतिकुमारजी पाटिल जयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित चेतनभाई मेहता राजकोट, पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित प्रकाशभाई कोलकाता, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित अश्विनभाई मलाड, पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ का प्रवचनों के माध्यम से और साथ ही अनेक युवा और प्रतिभाशाली विद्वानों का गोष्ठियों के माध्यम से प्रवचनसार पर लाभ प्राप्त हुआ। गोष्ठियों के लगभग सभी सत्रों में पण्डित श्री जे.पी. दोशी मुम्बई उपस्थित रहे।

गुरुदेवश्री द्वारा प्रवचनसार पर हुये प्रवचनों की पुस्तक दिव्यध्वनिसार का ब्र. हेमचन्दजी हेम द्वारा अंग्रेजी भाषा में अनुवादित ग्रन्थ का लोकार्पण भी हुआ। कार्यक्रम में श्री पार्श्वनाथ की टोंक की लाइव वन्दना, बैंगलोर के जिनमंदिर के लाइव दर्शन भी हुये।

कार्यक्रम का समापन दिनांक 29 नवम्बर को रात्रि में श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर की अध्यक्षता एवं मुम्बई के श्री देवीलालजी जैन, श्री आई.एस.जैन, श्री ब्रजलालजी जैन, श्री मांगीलालजी चंदन के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। आभार-प्रदर्शन श्री अशोकजी जबलपुर ने किया। समस्त कार्यक्रम ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद और पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में तथा श्री महीपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा के मार्गदर्शन और विराग शास्त्री जबलपुर व पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई के संयोजन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का सीधा प्रसारण जूम एप के साथ जैनेक्स्ट के यू ट्यूब चैनल पर किया गया।

प्रत्येक दिन विभिन्न सत्रों में समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों और श्रेष्ठीजनों को आमंत्रित किया गया। कोलकाता मुमुक्षु मण्डल के अनेक सदस्य इस कार्यक्रम के लाभ लेने के लिये शिखरजी पहुँचे थे। शिविर में प्रतिदिन 12 घंटे स्वाध्याय आदि तात्त्विक गतिविधियों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता और सहयोग के लिये ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अनंतराय ए. सेठ और महामंत्री श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई ने सभी वरिष्ठ एवं युवा विद्वानों, श्रेष्ठियों और लाभ लेने वाले समस्त साधर्मियों का हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

ऑनलाईन मासिक गोष्ठी संपन्न

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में मासिक गोष्ठी की शृंखला में दिनांक 6 दिसम्बर को **'चार अभाव'** विषय पर ऑनलाईन गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष श्री नेमीचंदजी दालबाजार ग्वालियर एवं विशेष वक्ता डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

इस अवसर पर प्रागभाव पर श्री नरेशजी जैन ग्वालियर, प्रध्वंसाभाव पर डॉ. अंकित शास्त्री लूणदा, अन्योन्याभाव पर ब्र. समता झांझरी उज्जैन, अत्यंताभाव पर पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई एवं चार अभाव की जीवन में उपयोगिता एवं जानने से लाभ पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती श्रुति जैन नोएडा, संचालन सुनीलजी शास्त्री मुरार ने किया। गोष्ठी के संचालक महेन्द्रकुमारजी जैन दानाओली, महेशजी जैन जनकगंज, सुनीलजी जैन भगत, रोहितजी जैन, अमितजी जैन रोमी रहे। तकनीकी कार्य संचित शास्त्री एवं कु. सांची जैन ने किया। समस्त कार्यक्रम जूम एप एवं यूट्यूब चैनल पर प्रसारित हुआ।

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की पुण्य तिथि के अवसर पर –

विशिष्ट गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की पुण्य तिथि के अवसर पर दिनांक 6 दिसम्बर को विशिष्ट गोष्ठी का आयोजन किया गया।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी में **प्रथम सत्र** के अध्यक्ष डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर एवं मुख्य अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर थे।

इस अवसर पर 'गुरुदेवश्री का जीवनवृत्त' विषय पर संदेश जैन दिल्ली, 'गुरुदेव के जीवन की प्रेरक घटनाएं' विषय पर समकित जैन ईसागढ, 'गुरुदेव न होते तो आज क्या होता' विषय पर अनिमेष जैन भारिल्ल राघौगढ, '20वीं सदी के सर्वाधिक चर्चित व्यक्तित्व : पूज्य गुरुदेवश्री' विषय पर शुभांशु जैन जबलपुर एवं 'समकालीन विद्वानों पर गुरुदेवश्री का प्रभाव' विषय पर अंकुर जैन खड़ैरी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण अमन जैन खनियांधाना एवं संचालन आप्तअनुशील जैन दमोह ने किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर थे।

इस अवसर पर 'पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचनशैली की विशेषता' विषय पर शाश्वत जैन भोपाल, 'गुरुदेवश्री और क्रमबद्धपर्याय' विषय पर समर्थ जैन हरदा, 'गुरुदेवश्री और मोक्षमार्गप्रकाशक' विषय पर स्वानुभव जैन खनियांधाना, 'समयसारमय गुरुदेवश्री' विषय पर संभव जैन दिल्ली एवं 'नो रिप्लाई इज़ बेस्ट रिप्लाई' विषय पर पल त्रिवेदी गांधीनगर ने अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सक्षम जैन ललितपुर एवं संचालन पवित्र जैन आगरा ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वरिष्ठ अध्यापक डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर को आयुर्वेद चिकित्सा क्षेत्र में नवीन शोध खोजों से चिकित्सा जगत को लाभान्वित करने एवं 30 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में फॉरसाइट फाउन्डेशन पुणे द्वारा **Innovative Consultant of Ayurveda** से सम्मानित किया गया।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई!

जैनदर्शन के आदर्श चरित्र : पण्डित टोडरमलजी

गुलाबी नगर जयपुर में जन्मे, एक श्रेष्ठ वक्ता, लेखक, साहित्यकार, संयमी श्रावक, अद्भुत और अपूर्व बुद्धि के धनी अर्थात् सर्वगुण संपन्न आचार्यकल्प पण्डितप्रवर टोडरमलजी जैनदर्शन के प्रकाण्ड विद्वान थे। ऐसे विद्वत्रत्न पर सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी साहित्य में जैन आचार्यों, साहित्यकारों के साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व नैतिक अवदान को परिलक्षित करती वैश्विक फलक पर साहित्यिक विमर्श की श्रृंखला 'रसानुभूति' की छठवीं परिचर्चा के अन्तर्गत दिनांक 16 व 17 दिसम्बर को विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया

दिनांक 16 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त युवा विद्वान डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं जयपुर इतिहास के विशेष जानकार श्री विनयकुमारजी पापड़ीवाल जयपुर ने पण्डित टोडरमल का व्यक्तित्व बताते हुए उनके समय का सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक परिदृश्य बताया। साथ ही अनेक विद्वानों और साहित्यकारों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण डॉ. संजीवजी गोधा जयपुर एवं स्वागत परिचय पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने किया।

दिनांक 17 दिसम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित हेमन्तभाई गांधी सोनगढ के वक्तव्य का लाभ मिला।

इस अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा ने मंगल सूचना देते हुए बताया कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी को ग्रन्थाधिराज समयसार मिलने के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में यह वर्ष सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, सिद्धायतन द्रोणगिरि के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कहान समयसार संप्राप्ति शताब्दी वर्ष' के रूप में मनाया जायेगा, जिसके अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में वर्षभर समयसार पर परिचर्चा की जायेगी।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पण्डित टोडरमलजी की कथा के रूप में मार्मिक जैन व अन्तरा जैन ने एवं स्वागत परिचय पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर ने किया। समस्त कार्यक्रम का संचालन पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा एवं अंकुरजी शास्त्री (भोपाल दूरदर्शन) ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. अर्पणजी जैन एवं संजयजी सेठी जयपुर ने किया। समस्त कार्यक्रम का प्रसारण सर्वोदय अहिंसा के यूट्यूब एवं ज़ूम एप पर किया गया, जिसका सैंकड़ों विद्वानों व साधर्मियों ने लाभ लिया। मीडिया प्रमुख श्री दीपकराज जैन थे।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

(1) दिनांक 29 नवम्बर को **'छहढाला'** विषय पर षोडशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अनेकान्तजी भारिल्ल जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से नीरज जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से निष्कर्ष जैन नौगांव ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से स्वस्ति जैन ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से आकाश जैन मौ ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता अविरल जैन खनियांधाना एवं द्वितीय सत्र में आयुष जैन शाहगढ रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 13 दिसम्बर को **'पंचभाव'** विषय पर अष्टादशम् गोष्ठी का आयोजन हुआ।

दो सत्रों में आयोजित इस गोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से कृणाल शाह गांधीनगर ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से अमन जैन आरोन ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ब्र. विमलाबेन जयपुर ने की। गोष्ठी का मंगलाचरण उपाध्याय कनिष्ठ से अक्षय जैन खड़ैरी ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष से पल त्रिवेदी गांधीनगर ने किया।

प्रथम सत्र में श्रेष्ठ वक्ता शाश्वत जैन सागर एवं द्वितीय सत्र में अखिल जैन मण्डीदीप रहे। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

दसवाँ वार्षिकोत्सव संपन्न

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र.) : यहाँ मंगलायतन विश्वविद्यालय स्थित श्री 1008 महावीर स्वामी दिग.जिनमंदिर का दसवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 19 व 20 दिस. को मनाया गया।

इस अवसर पर दिनांक 19 दिसम्बर को 'आधुनिक युग में जैनदर्शन की उपयोगिता' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की। वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, प्रो. डी.एन. भार्गव लाडनूं, डॉ. पंकजजी जैन अमेरिका, डॉ. प्रेमसुमन जैन उदयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती ज्योति धानाना नैरोबी एवं संचालन मंगलार्थी अनुभव जैन करेली ने किया।

दिनांक 20 दिसम्बर को कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. ए. डी. शर्मा ने की। वक्ताओं के अन्तर्गत डॉ. सुदीपकुमारजी जैन दिल्ली, डॉ. अनेकान्तजी जैन दिल्ली, डॉ. जयंतीलालजी जैन मंगलायतन, डॉ. धर्मचन्दजी जैन जोधपुर, डॉ. प्रियदर्शना जैन चेन्नई ने अपने मनोभाव व्यक्त किये।

कार्यक्रम में प्रात:काल श्री महावीर पंचकल्याणक विधान एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

के सी.डी. प्रवचन के पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में ब्र. कल्पनाबेन द्वारा धवला की वाचना, श्री पवनजी जैन एवं डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा द्वारा स्वाध्याय का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सेमिनार के उपरांत इंद्रसभा राजसभा आदि का आयोजन हुआ।

षट्खण्डागम ग्रन्थ की वाचना

तीर्थधाम मंगलायतन में प्रथम बार प्रथम श्रुत स्कन्ध 'षट्खण्डागम धवला टीका सहित' वाचना का कार्यक्रम मार्गशीर्ष पंचमी, शनिवार 5 दिसम्बर 2020 से अनवरत प्रारम्भ हो गया है, जिसका उद्घाटन कार्यक्रम 5 दिसम्बर को रखा गया। इस अवसर पर प्रात:काल सर्वप्रथम आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों का आयोजन हुआ, तत्पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का प्रवचन हुआ।

उद्घाटन सभा का संचालन डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर, मंगलाचरण श्रीमती निष्ठा जैन धर्मपत्नी मंगलार्थी अगम जैन **(I.P.S.)**, अध्यक्ष श्री सुनीलजी सर्राफ सागर, मुख्य अतिथि श्री विजयकुमारजी मुम्बई, विशिष्ट अतिथि श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, ध्वजारोहणकर्ता श्री चम्पालालजी भण्डारी, रमेशजी भण्डारी परिवार बैंगलोर, उद्घाटनकर्ता कोलकाता मुमुक्षु मण्डल द्वारा श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता एवं धवला विराजमानकर्ता श्रीमती ज्योति-अनिल जैन (पी.डब्लू.डी.) थे। आभार प्रदर्शन श्री पवन जैन अलीगढ एवं पण्डित अशोक लुहाड़िया मंगलायतन ने किया।

ब्र. कल्पना बेन जयपुर द्वारा मंगलाचरण करके धवला वाचना का औपचारिक उद्घाटन किया गया। साथ ही स्थानीय विद्वान पण्डित अशोकजी लुहाड़िया, पण्डित सचिनजी जैन, पण्डित सुधीरजी शास्त्री, पण्डित सचिन्द्रजी शास्त्री का समागम प्राप्त हुआ।

नोट :– षट्खण्डागम (धवलाजी) वाचना प्रतिदिन 1.30 से 3 बजे तक रखी गयी है, आप ऑनलाइन **Zoom ID 912-1984198 Passcode 1008** पर देख सकते हैं।

सर्वोदय अहिंसा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित –

जीवन हो जावे समयसार योजना

कहानसार समयसार सम्प्राप्ति वर्ष के अन्तर्गत आप निम्न विषय कण्ठस्थ कर सकते हैं– 1. समयसार मूल गाथा 2. समयसार मूल कलश 3. नाटक समयसार

यथार्थ में तो ग्रंथाधिराज कंठस्थ होना ही पुरस्कार है, फिर भी प्रथम 10 प्रतिभागियों को 5100/– की नगद राशि प्रत्येक ग्रंथ के लिए पुरस्कार रूप में दी जाएगी। उक्त विषय सुनाने वाले महानुभावों से रात्रिभोजन त्याग, कंदमूल–जमींकंद का त्याग अपेक्षित है।

निर्देशक – डॉ. संजीवकुमार गोधा जयपुर, संयोजक – संजय शास्त्री बड़ामलहरा, समकित शास्त्री खनियांधाना (95092 32733)

शोक समाचार

(1) **रायपुर (छ.ग.) निवासी श्री प्रेमचंदजी गुरहा** का अल्प बीमारी के पश्चात् दिनांक 5 सितम्बर को देहावसान हो गया। आप एवं आपका परिवार रायपुर एवं जयपुर की विभिन्न सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों में निरंतर अग्रणी रहा है।

आप रायपुर टैगोर नगर स्थित पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के संस्थापक सदस्य रहे हैं। यहाँ के मंदिर में भगवान आदिनाथ की प्रतिमा के विराजमान करने व स्वाध्याय भवन के निर्माण में आपका तन–मन–धन से पूर्ण योगदान रहा है।

श्री टोडरमल स्मारक भवन की गतिविधियों में भी आपका निरंतर योगदान रहता था। यहाँ के शिविरों में उपस्थित होकर तो लाभ लेते ही थे, फरवरी 2012 में संपन्न पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में महेन्द्र इन्द्र बनने का सौभाग्य भी आपको मिला था। स्मारक भवन में सिद्धचक्र महामंडल विधान का भव्य आयोजन भी आपके द्वारा संपन्न हुआ था।

चन्देरी (म.प्र.) के तीर्थधाम आदीश्वरम् पंचकल्याणक (जनवरी 2012) में सौधर्म इन्द्र बनने का एवं इसी महोत्सव में मूलनायक आदिनाथ भगवान की 61 इंची उन्नत पद्मासन प्रतिमा विराजमान करने का सौभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ। सन् 2015 में आपके विवाह की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपने समस्त परिजनों को शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर एवं पंचतीर्थों की वन्दना अभिषेक–पूजन–विधान सहित धूमधाम से करायी थी।

आपके पीछे आपकी धर्मपत्नी श्रीमती राजेश गुरहा, सुपुत्र श्री संजय–शैलेन्द्र–प्रबोध, पुत्रवधु श्रीमती सुषमा–मनीषा–रागिनी, पौत्र–पौत्री संयम–सर्वांग–सौम्या–श्रेया–रिद्धि आदि भरा–पूरा परिवार है। आपके सुपुत्र भी अनेक धार्मिक सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी हैं एवं धार्मिक सामाजिक कार्यों में अपना भरपूर योगदान देते हैं।

आपके वियोग से जैन समाज व संस्थाओं की अपूरणीय क्षति हुई है।

(2) डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल बुढार के तृतीय पुत्र **श्री ज्ञानानन्द बंसल वर्कमेन इन्चार्ज एस.ई.सी.एल. धनपुरी** का दिनांक 23 अक्टूबर को 51 वर्ष की आयु में असामयिक देहावसान जागृत अवस्था में शांतपरिणामों सहित हो गया। आप धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते थे, आप अध्यात्मप्रेमी,अत्यंत व्यवहार कुशल व योग्य कार्यकर्ता थे।

श्रीमती आत्मप्रभा बंसल ने उनकी स्मृति में स्थानीय जिनमंदिरों के अतिरिक्त वीतराग–विज्ञान हेतु 1100/– एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/– रुपये प्रदान किये।

(3) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक, संस्कृत–प्राकृत के विशेषज्ञ कुंभोज बाहुबली (महा.) निवासी डॉ. विजयसेन पाटील की धर्मपत्नी एवं वर्तमान

विद्यार्थी श्रीवर्धन पाटील (शास्त्री प्रथमवर्ष) की माताजी **सौ. श्रद्धा विजयसेन पाटील** का दिनांक 19 नव. को हृदयगति रुकने से देहावसान हो गया। आप बहुत ही धार्मिक महिला थीं, कुंभोज बाहुबली द्वारा संचालित हाई स्कूल में अध्यापिका थीं, मधुर कंठ के कारण वहाँ के छात्रों को भजन गाना भी सिखाती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 5000-5000/- रुपये प्राप्त हुये।

(4) खड़ैरी (म.प्र.) निवासी श्री रामकरणजी नामदेव का दिनांक 20 नवम्बर को आत्मसाधनापूर्वक देहावसान हो गया।

जैन कुल में जन्म न होने पर भी आप अत्यंत स्वाध्यायी थे, अनेक बार गुरुदेवश्री कानजीस्वामी एवं बहिनश्री चम्पाबेन से तत्त्वचर्चा करने का सौभाग्य मिला। आपकी स्मृति में दिनांक 5 दिसम्बर को मुमुक्षु मण्डल खड़ैरी एवं टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद् खड़ैरी के सभी साधर्मीजनों द्वारा वैराग्य सभा आयोजित की गयी।

(5) बीना (म.प्र.) निवासी श्री शीलचंदजी सर्राफ का 77 वर्ष की आयु में दिनांक 27 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 2100/- रुपये प्राप्त हुये।

(6) जनता कॉलोनी-जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती चंद्रादेवी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री त्रिलोकचंदजी जैन का दिनांक 4 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप जनता कॉलोनी स्वाध्याय मंडल की प्रमुख कार्यकर्ता थीं, सभी धार्मिक कार्यों व मंदिर की व्यवस्थाओं में आपका सक्रिय सहयोग रहता था। आपकी स्मृति में 1100/- रुपये संस्था हेतु प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पाठकों से निवेदन

वीतराग-विज्ञान (मासिक) पत्रिका के कवर पृष्ठ पर प्रतिमाह अलग-अलग दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों/मन्दिरों की फोटो प्रकाशित की जाती है। आपसे निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र की सुन्दतम आकर्षक फोटो (शिखर सहित) भेजें, ताकि हम समयानुसार उसे छाप सकें। मन्दिर का फोटो डाक द्वारा निम्न पते पर या सॉफ्टकॉपी ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। ● पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141) 2705581, 2707458

E-mail - ptstjaipur67@gmail.com

अस्थायी वेदी का निर्माण हुआ

कानोड-उदयपुर (राज.) : यहाँ नया बाजार स्थित अतिप्राचीन श्री वीतराग दिगम्बर जैन मन्दिर में विराजमान मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान की वेदी के जीर्णोद्धार के लिये श्री शांतिलालजी पटवारी द्वारा अस्थायी वेदी का निर्माण किया गया।

इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री टोकर द्वारा श्री शांति विधान, विधि-विधान से मंत्रोच्चारपूर्वक वेदी शुद्धि के पश्चात् सभी प्रतिमाओं को अस्थायी वेदी पर विराजमान किया गया। डॉ. महावीरप्रसादजी द्वारा प्रतिमाओं के दर्शन, पूजन आदि के महत्व को समझाया गया।

वार्षिकोत्सव सानन्द संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ संस्कारतीर्थ शाश्वतधाम उदयपुर के तृतीय वार्षिकोत्सव का आयोजन दिनांक 5 दिसंबर से 7 दिसंबर तक ऑनलाइन आयोजित किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी. डी. प्रवचन एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

इस मंगल प्रसंग पर पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री और डॉ. विवेकजी जैन छिंदवाड़ा द्वारा सर्वज्ञदेव विधान, श्री आदिनाथ पंचकल्याणक विधान एवं श्री 24 तीर्थंकर विधान भक्तिभावपूर्वक संपन्न कराया गया।

वार्षिकोत्सव के प्रसंग पर विद्वत् गोष्ठियों का भी आयोजन किया गया। गोष्ठियों का संचालन सुश्री पूजा जैन, डॉ. अंकित किकावत व डॉ. ममता जैन शाश्वतधाम उदयपुर ने किया।

विपरीत परिस्थितियों में स्थापित ध्रुवधाम बांसवाड़ा, सिद्धायतन द्रोणागिरी, महावीर विद्या निकेतन नागपुर का विशेष परिचय भी समाज को कराया गया। साथ ही डॉ. पारसमलजी अग्रवाल उदयपुर, पण्डित जगदीश सिंह पंवार उज्जैन, श्री रमेशजी सेनानी दुबई का भी परिचय पण्डित प्रदीप झांझरी की अध्यक्षता में समाज को कराया गया। आप सभी जैनधर्म से प्रभावित होकर आत्मसाधना में संलग्न हैं।

शाश्वतधाम में श्री नरेन्द्र दलावत, श्री चांदमल ललितकुमार किकावत, श्री भावेश कालिका परिवार विधान के अवसर पर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री अजितजी जैन बडोदरा, श्री बी. डी. जैन मुम्बई, श्री आई. एस. जैन मुम्बई, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर का विशेष योगदान रहा।

श्री महावीर कुन्दकुन्द-कहान शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित

श्री समयसार विद्या निकेतन

आत्मायतन-ग्वालियर

विश्वविख्यात जैन स्वर्णमन्दिर एवं ऐतिहासिक गोपाचल पर्वत से सुप्रसिद्ध

ग्वालियर के इतिहास में प्रथम बार

किन्हीं जैनाचार्य के ग्रन्थ के नाम पर विश्व का प्रथम छात्रावास

प्रवेश प्रारम्भ 2020-21

कक्षा 7वीं में (CBSE बोर्ड से)

पत्र-व्यवहार एवं अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र
0751-4076810, 9893224022, 9425135097, 7023245776

अध्यक्ष सतीश जैन (ठेकेदार)	महामंत्री पण्डित शुद्धात्म जैन शास्त्री	कोषाध्यक्ष पण्डित धनेन्द्र शास्त्री
प्राचार्य श्रीमती अंजलि जैन	अधीक्षक पण्डित प्रदीप शास्त्री	अधीक्षक पण्डित प्रवीण शास्त्री

कार्यालय : प्राचार्य – श्री समयसार विद्यानिकेतन, आत्मायतन,
हलवाट खाना, किला गेट, ग्वालियर-474003 (मध्यप्रदेश)

ज्ञातव्य है कि यह 26 दिसम्बर का अंक जनवरी-2021 का ही अंक है।

मंगल महोत्सव में आप सभी का स्वागत है।

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर द्वारा आयोजित

श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान

दिनांक 25 दिसंबर 2020 से 1 जनवरी 2021 तक

निवेदक

श्री कुंदकुंद कहान दिगंबर जैन शासन प्रभावना ट्रूस्ट, इंदौर

मंगल आमंत्रण

R.N.I. No. 38278/83 ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20***

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर..... बढते चरण...

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

प्रकाशन तिथि : 24 दिसम्बर 2020

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**